Ch-1 परिचय

Q1. आर्थिक क्रिया से क्या समझते हैं? उदाहरण सहित समझाएं।

→ आधुनिक व्यष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत उन सभी क्रियाओं को आर्थिक क्रिया कहते हैं जिसका सम्बन्ध मानवीय आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने के लिए सीमित साधनों के उपयोग से है, सामान्यत: मानवीय आवश्यकता को सन्तुष्ट करने के लिए आर्थिक जगत में अनेकों क्रियाएं की जाती हैं जिन्हें निम्न वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है –

a) उत्पादन b) उपभोग c) विनिमय d) वितरण

अत: आर्थिक क्रियाओं से तात्पर्य उन क्रियाओं से है जो उत्पादन, उपभोग, विनिमय, वितरण से सम्बन्धित क्रियाओं में संलग्न होते हैं, सरल शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि आर्थिक क्रियाएं वे सभी क्रियाएं हैं जिनसे वैधानिक आय का सृजन तथा मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि होती है। जैसे – नर्स द्वारा बच्चों की देखभाल करना, नौकर द्वारा घर के कामकाज करना आदि, वहीं दूसरी ओर माँ द्वारा बच्चों की देखभाल करना, गृहणी द्वारा घर के कामकाज करना आर्थिक क्रिया नहीं है क्योंकि इन क्रियाओं को मुद्रा में नहीं मापा जा सकता है।

Q2. अर्थशास्त्र की विषय सामग्री कौन कौन सी है? विस्तार से समझाएं।

→ अर्थशास्त्र की विषय वस्तु का प्रत्यक्ष सम्बन्ध इसकी आर्थिक क्रियाओं से है, आर्थिक क्रियाओं के अनुसार, अर्थशास्त्र के अध्ययन विषय को निम्न पाँच भागों में बाँटा जाता है,

1) उपभोग (Consumption) – उपभोग आज अर्थशास्त्र का सबसे पहला विभाग माना जाता है, उपभोग

की क्रियाओं में आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तथा वस्तु की ~~उपयोगि~~ उपयोगिताओं को कम करने के प्रयास किये जाते हैं, दूसरे शब्दों में, उपयोगिता को काम करना ही उपभोग है।

~~अ~~ उपभोग में वस्तुओं और सेवाओं की उपयोगिता को नष्ट करने की क्षमता होती है, उपभोग के अन्तर्गत आवश्यकताओं, उनके लक्षण, वर्गीकरण तथा सन्तुष्ट करने की विधि का अध्ययन किया जाता है।

2. उत्पादन Production :- अर्थशास्त्र में उपभोग के बाद दूसरा स्थान उत्पादन का है, मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोगिता के सृजन को उत्पादन कहा जाता है, उपयोगिता के सृजन में मानवीय प्रयास होना आवश्यक है, तभी वह उत्पादन की श्रेणी में आएगा वरना नहीं, उत्पादन के इसी विभाग में हम उत्पत्ति के साधन उनके लक्षण और कार्यक्षमता, उत्पत्ति के नियम व उत्पत्ति की अन्य समस्याओं का अध्ययन करते हैं।

3. विनिमय Exchange :- विनिमय का अर्थ वस्तुओं की अदला बदली से है, प्रो. जेवन्स (Prof. Jevons) के अनुसार, कम उपयोगी वस्तुओं से अधिक उपयोगी वस्तुओं का आदान प्रदान विनिमय कहलाता है, यह आवश्यक है कि ~~वह~~ यह अदला-बदली स्वतन्त्रतापूर्वक और स्वेच्छा से होनी चाहिए, कीमत-निर्धारण विनिमय की प्रमुख समस्या है, कीमत-निर्धारण के अतिरिक्त इस विभाग में हम बाजार के रूप, मुद्रा, बैंकिंग, बीमा, एवं व्यापार आदि ~~वस्तुओं~~ पहलुओं का अध्ययन करते हैं।

4. वितरण Distribution :- उत्पत्ति के विभिन्न साधनों के सामूहिक सहयोग से जो उत्पादन होता है, उसका विभिन्न साधनों में बाँटना ही वितरण का अध्ययन है।

5. राजस्व Public Finance :- इसके अन्तर्गत लोक व्यय, लोक आय, लोक ऋण, वित्तीय प्रशासन आदि से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

Q3. अवसर लागत स्पष्ट कीजिए उदाहरण सहित समझाए।

अवसर लागत की धारणा इस तथ्य पर आधारित है कि उत्पत्ति के साधन सीमित किन्तु अनेक प्रयोग वाले हैं, चूंकि प्रत्येक साधन सीमित है इसलिए उसको सभी प्रयोगों में पूर्ण रूप से प्रयुक्त नहीं किया जा सकता है, सम्पूर्ण समाज की दृष्टि से किसी साधन को एक उद्देश्य के लिए प्रयोग करने का अर्थ है कि उसको अन्य उद्देश्य में प्रयोग में लेने के अवसर का त्याग करना पड़ेगा, किसी एक वस्तु के उत्पादन की अवसर लागत वस्तु की वे मात्राएँ हैं जिनका हमें त्याग करना पड़ रहा है। अतः वह लागत जो किसी साधन को उसके वर्तमान कार्य में लगे रहने के लिए प्रेरित करती है, अवसर लागत कहलाती है।

उदाहरण के लिए, यदि किसी साधन विशेष की एक निश्चित मात्रा को दो प्रयोगों - गेहूँ उत्पादन अथवा मशीन उत्पादन में लगाया जा सकता है और यदि एकसमान साधनों से रु 5 लाख मूल्य का गेहूँ अथवा रु 4 लाख मूल्य की मशीनें उत्पादित की जा सकती हैं तो साधनों के बेहतर प्रतिफल की दृष्टि से साधनों को गेहूँ के उत्पादन में लगाया जाएगा अर्थात रु 5 लाख मूल्य के गेहूँ के बदले रु 4 लाख मूल्य की मशीनों का परित्याग किया जाएगा, इस प्रकार परित्याग की गई मशीनों का मूल्य उत्पादित किये गये गेहूँ के मूल्य की अवसर लागत कहलाएगी।

Q4. उत्पादन सम्भावना वक्र क्या है? विस्तार से समझाएं। इसकी मान्यताओं को लिखिए।

→ वस्तुओं के उत्पादन के लिए अनेक विकल्प अर्थव्यवस्था के सामने आते हैं जिन्हें अर्थव्यवस्था की उत्पादन सम्भावनाएँ कहते हैं। यदि इन उत्पादन सम्भावनाओं को रेखाचित्र के द्वारा प्रदर्शित किया जाए तो उनके द्वारा बनने वाली रेखा को उत्पादन सम्भावना वक्र कहते हैं। उत्पादन सम्भावना वक्र वस्तुओं तथा सेवाओं के ऐसे सभी सम्भव संयोगों को प्रदर्शित करता है जिन्हें अर्थव्यवस्था में उपलब्ध संसाधनों एवं तकनीकी ज्ञान के साथ उत्पादित किया जा सकता है।

सैम्युलसन के अनुसार, "उत्पादन सम्भावना वक्र वह वक्र है जो दो वस्तुओं या सेवाओं के उन सभी संयोगों को प्रकट करती है, जिनका अधिकतम उत्पादन एक अर्थव्यवस्था के दिए हुए साधनों तथा तकनीक के द्वारा साधनों के पूर्ण रोजगार की स्थिति में सम्भव होता है।

Q5. उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर उत्पादन संभावना वक्र की निम्न मान्यताएं कही जा सकती हैं:

i) यह मान लिया जाता है कि उत्पादन के साधन सीमित एवं स्थिर हैं अर्थात उनमें कोई परिवर्तन नहीं हो रहा है।

ii) यह भी मान लिया जाता है कि उपलब्ध साधनों का पूर्ण एवं कुशल उपयोग किया जा रहा है।

iii) यह भी मान लिया जाता है कि उत्पादन की तकनीक स्थिर है, उनमें कोई परिवर्तन नहीं हो रहा है।

iv) उत्पादन संभावना वक्र की व्याख्या को सरल बनाने के लिए यह मान लिया जाता है कि अर्थव्यवस्था एक समय में केवल दो वस्तुओं के संयोगों का उत्पादन कर रही है।

Q5. उत्पादन संभावना वक्र की विशेषताओ को समझाएँ।

→ इसकी निम्न दो विशेषताएँ है।—

i) उत्पादन संभावना वक्र बायें से दायें नीचे की ओर ढालू होता है :-
(Production possibility curve slopes downward left to right

उत्पादन संभावना वक्र की यह विशेषता है कि यह बायें से दायें निम्नगामी होता है, इसका प्रमुख कारण यह है कि उत्पादन संभावना वक्र के संबंध में यह मान्यता होती है कि उत्पादन के साधन सीमित है तथा उनका पूर्ण उपभोग किया जा रहा है परिणामस्वरूप दोनो वस्तुओ के उत्पादनो को एक साथ नही बढ़ाया जा सकता है यानि जब एक वस्तु का उत्पादन बढ़ाया जाता है तो दूसरी वस्तु के उत्पादन को कम करना पड़ता है, फलस्वरूप उत्पादन संभावना वक्र बायें से दाये ढालू होती है,

ii) मूल बिन्दु के नतोदर वक्र (Concave to the point of origin):- उत्पादन संभावना वक्र मूल बिन्दु के नतोदर होता है इसका कारण यह है कि ज्यों-ज्यों प्रथम वस्तु की उत्पादन की मात्रा को बढ़ाया जाता है, उत्पादक को दूसरी वस्तु के उत्पादन की मात्राओं को कम करना पड़ता है, अत: उत्पादन बढ़ती अवसर लागत के नियम के आधार पर होगा, अर्थात A वस्तु की प्रत्येक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने की अवसर लागत वस्तु के उत्पादन में होने वाली हानि (opportunity cost) B के रूप में बढ़ने की प्रवृत्ति प्रकट करती है,

Q6. आर्थिक समस्या क्या है? यह क्यों उत्पन्न होती है?

→ आर्थिक समस्या :- जब विभिन्न आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए सीमित साधनों का कुशलतम प्रयोग किया जाता है, तब आर्थिक समस्या उत्पन्न होती है, आर्थिक समस्या उत्पन्न होने के प्रमुख कारण हैं:-

i) असीमित आवश्यकताएँ Unlimited Wants :- मनुष्य की आवश्यकताएँ अनन्त असीमित होती हैं, एक आवश्यकता के पूर्ण हो जाने पर नयी आवश्यकताएँ उत्पन्न होती रहती हैं, अतः मनुष्य की सभी आवश्यकताओं को सन्तुष्ट नहीं किया जा सकता है,

ii) आवश्यकताओं की तीव्रता में अन्तर Difference in Intensity of Wants :- आवश्यकताएँ तीव्रता की दृष्टि से भी भिन्न होती हैं अर्थात् प्रत्येक मनुष्य के लिए कुछ आवश्यकताएँ अधिक महत्त्वपूर्ण हैं और कुछ के लिए कम, अतः महत्त्व के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को अलग अलग प्राथमिकता के क्रम में रख सकता है,

iii) सीमित या दुर्लभ साधन (Limited or Scarce resources):- साधनों की सीमितता अथवा दुर्लभता से अभिप्राय है कि इनकी माँग इनकी पूर्ति से अधिक होती है,

iv) साधनों का वैकल्पिक प्रयोग Alternative Uses of Resources :- साधन न केवल सीमित होते हैं बल्कि इनके वैकल्पिक उपयोग भी होते हैं, उदाहरण के लिए, बिजली का उपयोग बिजली के पंखे, कूलर, फ्रिज, रोशनी

Q6. आर्थिक समस्या क्या है? यह क्यों उत्पन्न होती है?

→ आर्थिक समस्या :- जब विभिन्न आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए सीमित साधनों का कुशलतम प्रयोग किया जाता है, तब आर्थिक समस्या उत्पन्न होती है, आर्थिक समस्या उत्पन्न होने के प्रमुख कारण हैं:-

i) असीमित आवश्यकताएँ Unlimited Wants :- मनुष्य की आवश्यकताएँ अनन्त असीमित होती हैं, एक आवश्यकता के पूर्ण हो जाने पर नयी आवश्यकताएँ उत्पन्न होती रहती हैं, अत: मनुष्य की सभी आवश्यकताओं को सन्तुष्ट नहीं किया जा सकता है,

ii) आवश्यकताओं की तीव्रता में अन्तर Difference in Intensity of Wants :- आवश्यकताएँ तीव्रता की दृष्टि से भी भिन्न होती हैं अर्थात प्रत्येक मनुष्य के लिए कुछ आवश्यकताएँ अधिक महत्त्वपूर्ण हैं और कुछ के लिए कम, अत: महत्त्व के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को अलग अलग प्राथमिकता के क्रम में रख सकता है,

iii) सीमित या दुर्लभ साधन (Limited or Searce resources):- साधनों की सीमितता अथवा दुर्लभता से अभिप्राय है कि इनकी माँग इनकी पूर्ति से अधिक होती है,

iv) साधनों का वैकल्पिक प्रयोग Alternative Uses of Resources :- साधन न केवल सीमित होते हैं बल्कि इनके वैकल्पिक उपयोग भी होते हैं, उदाहरण के लिए, बिजली का उपयोग बिजली के पंखे, कूलर, फ्रिज, रोशनी

आदि में किया जा सकता है, अतः यहाँ भी हमारे सामने यह समस्या उत्पन्न हो जाती है कि हम किस साधन को किस काम के लिए प्रयोग करें।

v) चयन या चुनाव की समस्या Problem of choice :- कोई भी व्यक्ति, परिवार या देश अपने सीमित साधन से अपनी सभी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता, अतः उनके सामने यह समस्या बनी रहती है कि वह अपने कौन-से साधन को कितनी मात्रा में कौन-सी आवश्यकता की पूर्ति में लगाये? अन्य शब्दों में, " उसके सामने चयन की समस्या उत्पन्न हो जाती है और चयन की समस्या ही आर्थिक समस्या कहलाती है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि चयन की समस्या ही आर्थिक समस्या है, यदि मानवीय आवश्यकताओं की तरह साधन भी असीमित होते तो चयन की समस्या उत्पन्न नहीं होती और न ही कोई आर्थिक समस्या, दूसरे शब्दों में, साधनों की दुर्लभता ही सभी आर्थिक समस्याओं की जननी है, संक्षेप में, असीमित आवश्यकताएँ एवं सीमित साधन दो आधारभूत स्तम्भ हैं जिन पर सभी आर्थिक समस्याओं का ढाँचा खड़ा है, अर्थशास्त्र में आर्थिक समस्या का उदय तभी होता है जब चयन की समस्या या दुर्लभता की समस्या उत्पन्न होती है, "

---

7. अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु की विवेचना कीजिए,

→ विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र के अभिप्राय को एवं अर्थशास्त्र की विषय सामग्री को भिन्न भिन्न रूपों में प्रस्तुत किया है, विभिन्न अर्थशास्त्रियों के भिन्न भिन्न दृष्टिकोणों को चार वर्गों में बाँटकर अर्थशास्त्र की विषय सामग्री का विश्लेषण किया जा सकता है,

i) धनसम्बन्धी विचारधारा

Wealth related viewpoint :- प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों एडम स्मिथ, जे.बी.से, वाकर, सीनियर आदि ने धन, इसके अर्जन, वितरण एवं प्रयोग को अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री में सम्मिलित किया है। इन अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु में आर्थिक मानव एवं उसकी क्रियाओं को सम्मिलित किया।

ii) कल्यानवादी विचारधारा

Welfare related viewpoint :- मार्शल एवं उनके समकालीन अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र की विषय सामग्री में धन के स्थान पर मानव कल्याण के विचार की स्थापना की, कल्याणवादी विचारधारा के अनुसार अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री में उन आर्थिक क्रियाओं को सम्मिलित किया जाना चाहिए जिनका सम्बन्ध भौतिक कल्याण से होता है।

iii) दुर्लभता सम्बन्धी विचारधारा

Scarcity related view point :- रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र की विषय सामग्री में सीमित साधन एवं असीमित साध्यों से सम्बन्धित चुनाव समस्याओं को सम्मिलित किया है। रॉबिन्स के विचार में अर्थशास्त्र की विषय सामग्री में मानव व्यवहार की उन क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है जिनमें मानव अपने सीमित साधनों तथा अपनी असीमित आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करता है।

iv) विकास केन्द्रित विचारधारा

Growth viewpoint :- आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने विकास-केन्द्रीय क्रियाओं को अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री में सम्मिलित किया, सैम्युलसन के अनुसार अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री में 'सीमित साधनों के वितरण एवं आर्थिक विकास' — दोनों पहलुओं को सम्मिलित किया जाता है।

Q8. व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र में क्या अन्तर है?

→ व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर _

व्यष्टि अर्थशास्त्र Micro economics	समष्टि अर्थशास्त्र Macro economics
1. व्यष्टि अर्थशास्त्र में व्यक्तिगत स्तर पर आर्थिक समस्या का अध्ययन किया जाता है, जैसे_ एक उपभोक्ता, एक उत्पादक, एक फर्म	1) समष्टि अर्थशास्त्र में सम्पूर्ण अर्थशास्त्र की आर्थिक इकाइयों का अध्ययन किया जाता है. जैसे_ राष्ट्रीय आय, कुल उपभोग, सामान्य कीमत स्तर।
2) व्यष्टि अर्थशास्त्र में व्यक्ति और व्यक्ति के ~~आपस~~ व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।	2) समष्टि अर्थशास्त्र में समाज और समाज के व्यवहार का अध्ययन होता है।
3) व्यष्टि अर्थशास्त्र इस मान्यता पर आधारित है कि समष्टि प्राचल Macro Parameters स्थिर रहते हैं।	3) समष्टि अर्थशास्त्र में व्यष्टि प्राचलों Micro Parameters को स्थिर माना जाता है।
4) व्यष्टि अर्थशास्त्र में एक वस्तु की कीमत के निर्धारण का अध्ययन होता है।	4) समष्टि अर्थशास्त्र में सामान्य कीमत स्तर का अध्ययन होता है।
5) व्यष्टि आर्थिक समस्याओं के में कीमत यन्त्र Price Machanism अर्थात मांग और पूर्ति बलों की क्रिया निर्णायक होती है।	5) समष्टि आर्थिक समस्याओं जैसे_ रोजगार, गरीबी, स्फीति आदि के समाधान में सरकारी भूमिका निर्णायक होती है।

Q8. व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र में क्या अन्तर है?

→ व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर –

व्यष्टि अर्थशास्त्र Micro economics	समष्टि अर्थशास्त्र Macro economics
1. व्यष्टि अर्थशास्त्र में व्यक्तिगत स्तर पर आर्थिक समस्या का अध्ययन किया जाता है, जैसे – एक उपभोक्ता, एक उत्पादक, एक फर्म	1) समष्टि अर्थशास्त्र में सम्पूर्ण अर्थशास्त्र की आर्थिक इकाइयों का अध्ययन किया जाता है. जैसे – राष्ट्रीय आय, कुल उपभोग, सामान्य कीमत स्तर।
2) व्यष्टि अर्थशास्त्र में व्यक्ति और व्यक्ति के ~~आपस~~ व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।	2) समष्टि अर्थशास्त्र में समाज और समाज के व्यवहार का अध्ययन होता है।
3) व्यष्टि अर्थशास्त्र इस मान्यता पर आधारित है कि समष्टि प्राचल Macro Parameters स्थिर रहते हैं।	3) समष्टि अर्थशास्त्र में व्यष्टि प्राचलों Micro Parameters को स्थिर माना जाता है।
4) व्यष्टि अर्थशास्त्र में एक वस्तु की कीमत के निर्धारण का अध्ययन होता है।	4) समष्टि अर्थशास्त्र में सामान्य कीमत स्तर का अध्ययन होता है।
5) व्यष्टि आर्थिक समस्याओं के में कीमत यन्त्र Price Machanism अर्थात मांग और पूर्ति बलों की क्रिया निर्णायक होती है।	5) समष्टि आर्थिक समस्याओं जैसे – रोजगार, गरीबी, स्फीति आदि के समाधान में सरकारी भूमिका निर्णायक होती है।

9. आर्थिक क्रियाओ के आधार पर अर्थशास्त्र की विषय सामग्री क्या है?

→ अर्थशास्त्र की विषय वस्तु का प्रत्यक्ष सम्बन्ध इसकी आर्थिक क्रियाओ से है। आर्थिक क्रियाओ के अनुसार, अर्थशास्त्र के अध्ययन - विषय को निम्न पाँच भागो में बाँटा जाता है।

1) उपभोग Consumption :- उपभोग आज अर्थशास्त्र का सबसे पहला विभाग माना जाता है। उपभोग की क्रियाओ में आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए तथा वस्तु की उपयोगिताओ को काम करने के प्रयास किये जाते हैं। दूसरों शब्दो में उपयोगिता को काम करना ही उपभोग है।

उपभोग में वस्तुओ और सेवाओ की उपयोगिता को नष्ट करने की क्षमता होती है। उपभोग के अन्तर्गत आवश्यकताओं, इनके लक्षण, वर्गीकरण तथा सन्तुष्ट करने की विधि का अध्ययन किया जाता है।

2) उत्पादन Production :- अर्थशास्त्र में उपभोग के बाद दूसरा स्थान उत्पादन का है। मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोगिता के सृजन को उत्पादन कहा जाता है। उपयोगिता के सृजन में मानवीय प्रयास होना आवश्यक है, तभी वह उत्पादन की श्रेणी में आएगा वरना नहीं। उत्पादन के इस विभाग में हम उत्पत्ति के साधन, उनके लक्षण और कार्यक्षमता, उत्पत्ति के नियम व उत्पत्ति की अन्य समस्याओ का अध्ययन करते हैं।

3) विनिमय Exchange :- विनिमय का अर्थ वस्तुओं की अदला-बदली से है। प्रो. जेवन्स (Prof. Jevons) के अनुसार, कम उपयोगी वस्तुओ से अधिक उपयोगी वस्तुओ का आदान-प्रदान विनिमय कहलाता है। यह आवश्यक है कि यह अदला बदली स्वतन्त्रतापूर्वक और स्वेच्छा से होनी चाहिए।

कीमत - निर्धारण विनिमय की प्रमुख समस्या है, कीमत - निर्धारण के अतिरिक्त इस विभाग में हम बाजार के रूप, मुद्रा, बैंकिंग, बीमा, एवं ~~अन्तर~~ व्यापार आदि पहलुओं का अध्ययन करते है,

iv) वितरण Distribution :- उत्पत्ति के विभिन्न साधनो के सामूहिक सहयोग से जो उत्पादन होता है, कि उसका विभिन्न साधनो में बाँटना ही वितरण का अध्ययन है,

v) राजस्व Public Finance :- इसके अन्तर्गत लोक व्यय, लोक आय, लोक ऋण, वित्तीय प्रशासन आदि से सम्बन्धित समस्याओ का अध्ययन किया जाता है,

---

Q10. अर्थशास्त्र की मूलभूत आर्थिक समस्याएँ क्या है?

→ प्रो. सैम्युलसन ~~की [illegible]~~ ने निम्नलिखित तीन प्रकार की मूलभूत आर्थिक समस्याओं का वर्णन किया है,

i) किन वस्तुओं का तथा कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाये?
ii) वस्तुओ का उत्पादन किस प्रकार किया जाये?
iii) वस्तुओ का उत्पादन किसके लिए किया जाये?

i) किन वस्तुओ का तथा कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाए? - उपर्युक्त तीनो ही आर्थिक समस्याएँ किसी भी अर्थव्यवस्था के सामने उत्पन्न होती है और तीनो ही आर्थिक समस्याओं का महत्वपूर्ण पहलू चुनाव का स्थान है अर्थात किन वस्तुओ का तथा कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाये यह उत्पादन की एक मूलभूत समस्या है, एक देश की सरकार के लिए यह समस्या उत्पन्न होती है कि वह अपने देश के किस वर्ग की आवश्यकता की पूर्ति के लिए वस्तुओं का उत्पादन करें चूँकि प्रत्येक वर्ग की आवश्यकताएँ अलग - अलग होती है, ये वर्ग है - निम्न वर्ग,

मध्यम वर्ग एवं उच्च वर्ग, साथ ही सम्पूर्ण देश की आवश्यकताएँ असीमित होती हैं, किन्तु देश में साधन असीमित मात्रा में उपलब्ध नहीं होते जिनसे देश की जनता की प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति की जा सके, अतः ~~सरकार~~ सरकार के सामने चुनाव की समस्या उत्पन्न होती है कि वह किन वस्तुओं का उत्पादन करे और कितनी मात्रा में करे।

ii) वस्तुओं का उत्पादन किस प्रकार किया जाए? — दूसरी समस्या अर्थात 'उत्पादन किस प्रकार किया जाए', पहली समस्या से ही जुड़ी हुई है, यह निर्धारित करने के बाद कि किन वस्तुओं का और कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाये, हमें यह निर्धारित करना होगा कि 'उत्पादन किस प्रकार किया जाये' अर्थात उत्पादन के लिए कौन-सी तकनीक चुनी जाये - श्रम प्रधान अथवा पूँजी सार्वजनिक क्षेत्र में विकसित क्षेत्र में अथवा पिछड़े क्षेत्र में इत्यादि, इन सबके साथ ही यह तय करना आवश्यक है कि साधनों का कौन-सा संयोग लिया जाये जो कुशलतम साधन संयोग हो अर्थात साधनों के उस संयोग से उत्पादन अधिकतम हो या लागत न्यूनतम हो।

iii) वस्तुओं का उत्पादन किसके लिए किया जाए? — उपर्युक्त दोनों समस्याओं अर्थात 'क्या' और 'कैसे' के समाधान के बाद तीसरी समस्या यह उत्पन्न होती है कि उत्पादन किसके लिए किया जाए? अर्थात उत्पादन किस वर्ग के लिए किया जाये, निर्धन वर्ग के लिए अथवा धनी वर्ग के लिए, वर्तमान समय को ध्यान में रखकर उत्पादन किया जाये अथवा भविष्य के लिए इत्यादि, साथ ही उत्पादित वस्तुओं का बँटवारा कैसे किया जाये?

इस प्रकार, अर्थशास्त्र चुनाव सम्बन्धी विज्ञान है, उपर्युक्त सभी आर्थिक समस्याएं, चुनाव की समस्या का ही रूप हैं; प्रो. रॉबिन्स का कहना है कि "जब लक्ष्यों (आवश्यकताओं) को पूरा करने के लिए समय और साधन सीमित होते हैं और इनके वैकल्पिक उपयोग हो सकते हैं और

महत्व के आधार पर विभिन्न प्रकार के लक्ष्यों के बीच भेद किया जा सकता है, तब मानव व्यवहार निर्णय का रूप धारण कर लेता है।" अतः स्पष्ट हो जाता है कि "अर्थशास्त्र चुनाव सम्बन्धी विज्ञान है।"

Q.11. अर्थशास्त्र को यथार्थवादी विज्ञान तथा आदर्शवादी विज्ञान क्यों कहा जाता है?

→ यथार्थवादी विज्ञान Positive Science :- अर्थशास्त्र यथार्थवादी के रूप में वस्तु, स्थिति या घटना का वास्तविक अध्ययन करता है अर्थात अर्थशास्त्र में इस बात का अध्ययन किया जाता है कि "वस्तु, स्थिति या घटना विशेष क्या है।" यहाँ इस ~~बा~~ बात का अध्ययन नहीं होता कि "क्या होना चाहिए।" उदाहरण के लिए यथार्थवादी विज्ञान केवल यह बतलायेगा कि यदि विष खा लिया जाए तो इन्सान की मृत्यु हो जाएगी। यह विज्ञान यह नहीं इंगित करेगा कि विष खाना चाहिए अथवा नहीं। अर्थशास्त्र ~~सर्वशास्त्री~~ विज्ञान यथार्थवादी विज्ञान के रूप में इस बात का अध्ययन करता है कि किसी वस्तु के मूल्य घटने पर उसके मांग में वृद्धि होगी, परन्तु मूल्य घटना उचित है या अनुचित अथवा मांग बढ़ना उचित है या अनुचित इस बात की व्याख्या अर्थशास्त्र में नहीं की जाती है।

आदर्शवादी विज्ञान Normative Science :- पुनः अर्थशास्त्र एक आदर्शवादी विज्ञान के रूप में भी अध्ययन किया जाता है। अर्थशास्त्र मानव के भौतिक कल्याण में वृद्धि करने के लिए अर्थव्यवस्था में विभिन्न आदर्शों एवं सुझावों को प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए अर्थशास्त्र यह बताता है कि आय की असमानता को कैसे दूर किया जाए, उत्पादन में वृद्धि कैसे की जाए बेरोजगारी कैसे दूर की जाए राष्ट्रीय एवं प्रति व्यक्ति आय में कैसे सुधार हो आदि, इस प्रकार

अर्थशास्त्र अर्थव्यवस्था, समाज, राष्ट्र एवं व्यक्तियो के सम्बन्ध में उत्पन्न होने वाली समस्याओ के लिए समाधान प्रस्तुत करता है और आर्थिक कल्याण में वृद्धि करता है।